'कुबेर के सेवक की चिट्ठी'

डॉ0 वीरेन्द्र कुमार 'सुमन'

संस्कृत साहित्य–सागर–समंथन–संजात–सुरासेवन–उद्भट्ट–विद्वान् कालिदास की कृति मेघदूत अप्रतिम गीति काव्य है। यह पूर्व मेघ तथा उत्तर मेघ नामक दो भागों में विभक्त, 121 श्लोको में वर्णित, मन्दाक्रान्ता छन्द से मण्डित कवि की कल्पना शक्ति का ज्वलन्त उदाहरण है। यह विप्रलम्भ श्रृंगार की हृदय द्रावक करूण गीति काव्य है। इसका आदि विरह के आंसुओ से होता है। इसमें यक्ष, रावण का भाई धनपति का भृत्य है। जो अपने कार्य में प्रमाद के कारण मालिक के आदेश से एक वर्ष तक अलका से निर्वासित जीवन के रूप में रामगिरि पर्वत पर आश्रम बनाता है।